Year 01, Vol. 03, April-June, 2017

मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

वर्ष 01, अंक 03, अप्रैल–जून, 2017

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

नर्मदा उद्गम स्थल, अमरकंटक

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान दिनांक 15 मई, 2017 को नर्मदा सेवा यात्रा के समापन अवसर पर अमरकंटक में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होते हुए।

मध्यप्रदेश शासन वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

वर्ष 01, अंक 03, अप्रैल-जून, 2017

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

Year 01, Vol. 03, April-June, 2017

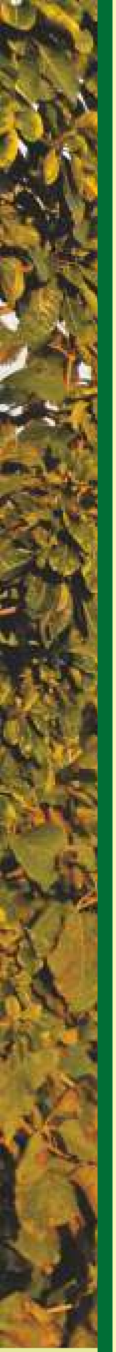

Patron :
Dr. Animesha Shukla
Principal Chief Conservator of Forests (HOFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :
Shahbaz Ahmad
Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)

Y. Satyam
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Development)

Sudhir Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests (JFM)

Alok Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Wildlife)

Dr. Abhay Kumar Patil
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)

Sameeta Rajora
Chief Conservator of Forests (Director, Van Vihar)

B.K. Dhar
Prachar Adhikari

Editor :
Sameeta Rajora, CCF

Prachar Prasar Prakosth Team :
S.P. Jain, DCF
Rohan Saini

Contact :
Prachar Prasar Prakosth, Room No. 140, Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 07552524293

Published by :
Prachar Prasar Prakosth

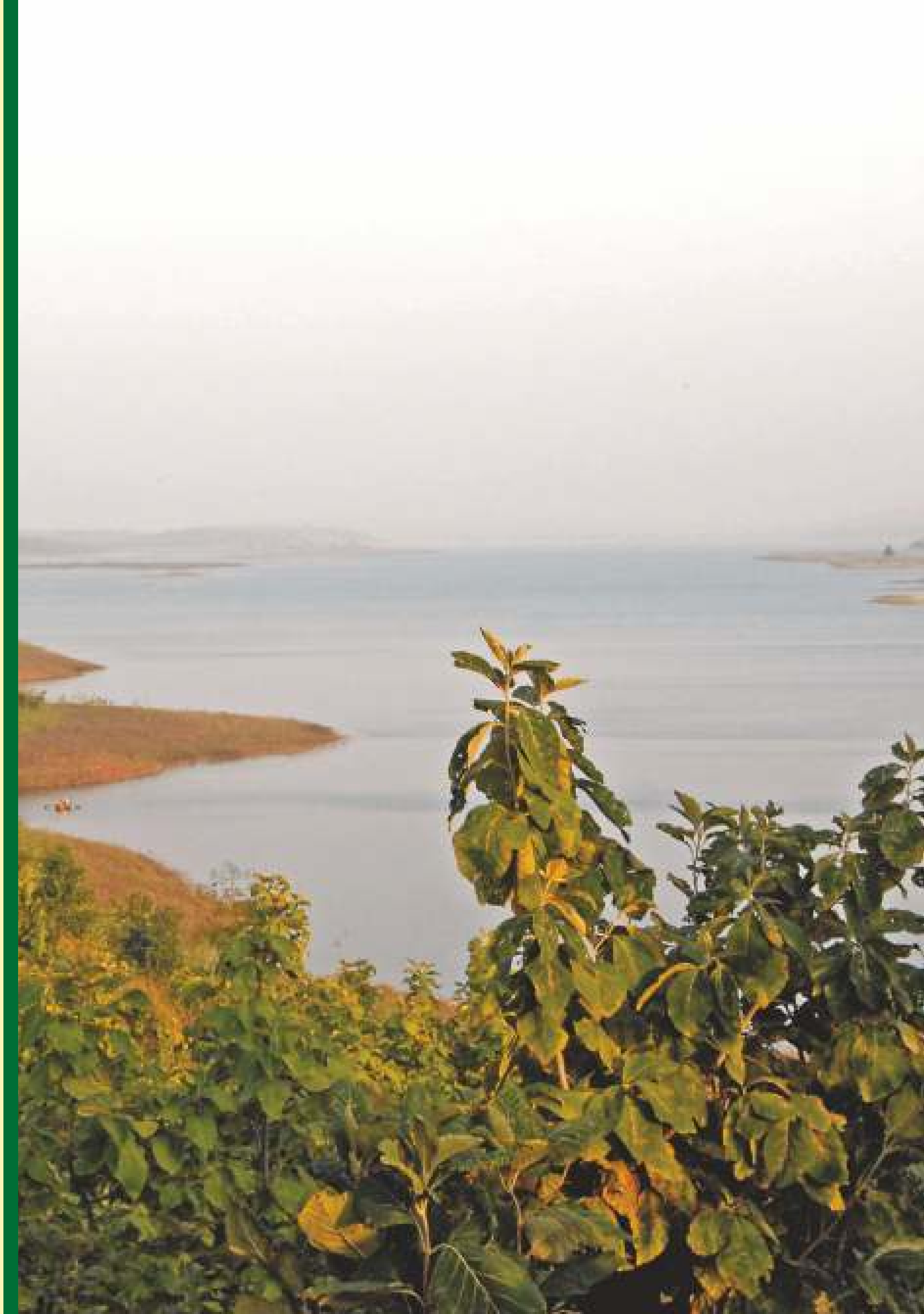

The views expressed in various articles belong to the authors of the article. Madhya Pradesh Forest Department may not agree with the views expressed by authors and will not be responsible for the correctness of the article. Madhya Forest Department is not responsible for any liability arising out of context/text of the article published in this magazine.

No part of this magazine can be reproduced and published without the consent of the publishers of Madhya Pradesh Vananchal Sandesh. All legal disputes will come under the jurisdiction of Bhopal, Madhya Pradesh

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

वर्ष 01, अंक 03, अप्रैल–जून, 2017

- पौधारोपण बना प्रदेश का आकर्षण — 01
- स्वस्थ जन–स्वस्थ वन को चरितार्थ करती दीनदयाल वनांचल सेवा — 03
- नर्मदा सेवा यात्रा का भव्य समापन — 05
- International Biodiversity Day Celebrations — 06
- World Environment Day Celebrations — 08
- हरियाली महोत्सव के संदेश — 09
- राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स भोपाल एवं क्षेत्रीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स इकाइयों द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य — 11
- राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की गतिविधियां — 12
- केन्द्रीय पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा लघु वनोपज प्रसंस्करण केन्द्र का निरीक्षण — 14
- **नवाचार**
  1. मध्यप्रदेश इकोपर्यटन विकास बोर्ड द्वारा अतिथि सत्कार प्रशिक्षण का आयोजन — 15
  2. बांसापुरा रोपणी में पौधों को जानवरों से बचाने के लिए अनूठी पहल — 15
  3. व्हाईट हाउस की सुरक्षा करने वाले बेल्जियम मेलेनॉईस श्वान करेंगे मध्यप्रदेश के बाघों की सुरक्षा — 16
  4. कान्हा टाइगर रिजर्व में प्रदेश का सबसे बड़ा बोमा — 17
  5. बीज बचाओ, कृषि बचाओ यात्रा — 18
  6. कृषक समृद्धि में बांस की भूमिका — 20
- **सफलता की कहानी**
  1. ईंधन की आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम–ऊर्जावन — 21
- **विविधा**
  1. मुख्यमंत्री श्री चौहान को राज्य वन विकास निगम ने 111 करोड़ 44 लाख का चेक सौंपा — 23
  2. ईकोपर्यटन बोर्ड ने शुरू की ऑनलाइन बुकिंग सेवा — 23
  3. वन विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियां — 24
  4. राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा संग्राहकों के हितों की रक्षा — 25
  5. जैव–विविधता संरक्षण एवं जागरुकता कार्यशाला — 26
  6. कूनो वन्यप्राणी वनमंडल में बटरफ्लाई मैपिंग कार्यशाला का आयोजन — 27
  7. राष्ट्रीय बाघ आंकलन वर्ष 2018 के लिए प्रशिक्षण — 27
  8. भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति व पदोन्नति — 27
  9. छिंदवाड़ा में न्यायालयीन प्रकरणों की कार्यशाला का आयोजन — 28
  10. ''बारासिंघा कंजरवेशन एट कान्हा'' पुस्तक का विमोचन — 28
  11. वन विहार में सिंहों का आगमन — 29
  12. Wildlife Wonders of Madhya Pradesh Photography Contest — 30
- **अखबारों के आईने में** — 31
- **हरित साहित्य**
  1. एक संकल्प– सृजन का — 33
  2. धरती धरोहर है। — 34
- **ईकोटूरिज्म**
  1. सिवनी जिले में उभरते प्रमुख ईकोटूरिज्म स्थल — 35
- **श्रद्धांजलि** — 36

Editorial

Do you think that we, in general, underestimate the importance of trees? They are not merely pleasant sources of shade but a potential major answer to some of our most pressing environmental problems. Trees, our planet's heat shield, the sequesters of carbon dioxide, nature's water filters, economically advantageous, providing environmental and aesthetic benefits, no less than a near miracle and we take them for granted. Not anymore!

A mega plantation drive was initiated by the Honorable Chief Minister of Madhya Pradesh himself. His aim, to protect the environment and save river Narmada the "life line" of MP flowing in the state. He directed and led a massive campaign to convert plantation drive as a festive activity taken up by not only government institutions but by every section of the community at large. The H'ble Chief Minister, the Minister of Forests, and the Minister of State Forests Madhya Pradesh sent out separate messages on celebrating 'Hariyali Mahotsav' assuring people of their commitment to the cause of forest conservation and protection and urging them to plant trees and take up collective responsibility of their upkeep.

The Forest Department as well as other departments of the Government worked tirelessly and with full commitment towards creating awareness among people about environmental issues and were involved in systematic and large scale preparations for planting of about six crore saplings (on 2nd July 2017), along the banks of river Narmada.

While the department was preparing for the massive tree plantation drive, a tragedy struck on 18th May when we lost a guide, an environmentalist and our respected Minister of State (independent charge) Environment, Forest and Climate Change, Shri Anil Madhav Dave. We pay tribute and salute him for his passion and commitment towards the environment, very aptly expressed in his last wish, "If you want to cherish my memories, plant trees and save them. This would give me pleasure."

During the months of April to June a lot of hard work was put in by the various wings of our department towards nurturing of planting stock, field preparation for plantations, conducting workshops to 'connect people to nature', creating awareness on the need to protect biodiversity using innovative ways, mobilizing support of local communities for plantation, protecting the interests of forest produce collecting people, providing health care in the remotest of forest villages. The wildlife wing deputed trained 'dog squads' for strengthening wildlife protection, the State Tiger Strike Force continued to fearlessly nab criminals and bring them to justice and continued to create new standards in active management of wildlife and its protection.

Here is a glimpse of the 'people and nature' centric activities and the commitment shown by our forest family. Hope you appreciate the efforts.

I am reminded of an old proverb that seems apt for the moment, "When is the best time to plant a tree? " The answer: "Twenty years ago. The second best time? Today."

Hope you have planted your tree!

With Best Compliments.

(Sameeta Rajora)

पौधारोपण बना प्रदेश का आकर्षण

महा पौधारोपण की तैयारियां

पौधारोपण पर समीक्षा बैठक

31 मई, 2017 को एप्को भवन, भोपाल में मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश शासन श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में प्रदेश के वरिष्ठ अधिकारियों, 24 जिलों के कलेक्टर एवं क्षेत्रीय अधिकारियों के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें 2 जुलाई, 2017 को नर्मदा नदी के जल ग्रहण क्षेत्र में पौधारोपण की तैयारी की समीक्षा की गई। यह निर्णय लिया गया की जन सहयोग से 6 करोड़ पौधे नर्मदा नदी जलग्रहण क्षेत्र में लगाए जावेंगे। नर्मदा नदी को संरक्षित करने के अभूतपूर्व प्रयास में सभी क्षेत्र से जुड़े लोग भाग लेंगे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी द्वारा यह उल्लेखित किया गया कि नर्मदा सेवा यात्रा पृथ्वी को बचाने का एक बड़ा अभियान है। नर्मदा सेवा यात्रा के माध्यम से नदी संरक्षण का अद्‌भुत काम प्रदेश में किया गया है। इसके अध्ययन के लिये दूसरे प्रदेशों से दल आ रहे हैं एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान की सराहना की है। उन्होंने कहा कि इसे एक जन–अभियान बनाकर इस में अधिक से अधिक आमजनों को जोडें एवं प्रदेश के हर नागरिक के मन में पौधा लगाने की भावना जगाएं।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक

माननीय मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश शासन श्री शिवराज सिंह चौहान ने 28 जून, 2017 को सभी जिला कलेक्टरों, क्षेत्रीय अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों के साथ वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से वृक्षारोपण की तैयारी की समीक्षा की और आवश्यक दिशा–निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री ने नर्मदा बेसिन से संबंधित जिलों में इस जन–अभियान को एक जन–महोत्सव का रूप दिए जाने की बात कही। इसमें सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सभी संगठनों तथा किसान, व्यापारी, विद्यार्थी, सरकारी कर्मचारी आदि सभी वर्गो की सहभागिता सुनिश्चित की जाने व पौधों, गड्ढे एवं लोगों की पर्याप्त व्यवस्था रखने पर जोर दिया गया।

जबलपुर, मध्यप्रदेश

खंडवा, मध्यप्रदेश

पौधारोपण की अन्य गतिविधियाँ

मध्यप्रदेश में 2 जुलाई, 2017 को एक दिन में 6 करोड़ से अधिक पौधे प्रदेश भर में नर्मदातट के दोनों ओर लगाने का लक्ष्य रखा गया था। इस महापौधारोपण की तैयारियां जोर शोर से की गईं। जिलों में पौधे लगाने के लिये गड्ढे तैयार किये गये।

पौधारोपण के इस महाअभियान में विभिन्न स्थलों पर बांस, करंज, शीशम, नीम, ग्राफ्टेड आंवला, बीजू आम, अमरूद, कटहल, कोसम, जामुन, बेल, पीपल, बरगद, नासपाती, सूबबूल, खम्हार आदि प्रजाति के पौधे रोपित किए गये। पौधरोपण अभियान के लिये नर्मदा के किनारे सरकारी और निजी जमीन को चिन्हित किया गया। पौधे लगाने का काम वन विभाग, कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग और ग्राम पंचायतों के माध्यम से किया गया। नर्मदा तट के किनारे जिन किसानों के खेत हैं, उन्हें भी फलदार पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया गया।

स्वस्थ जन-स्वस्थ वन को चरितार्थ करती दीनदयाल वनांचल सेवा

दिनांक 28.05.2017 को शाहपुर स्वास्थ्य शिविर में उपस्थित हितग्राहियों को सम्बोधित करते हुए वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार

दीनदयाल वनांचल सेवा वन सुरक्षा एवं विकास के साथ सुदूर वनाचलों में पदस्थ वन अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग से वनवासियों के कल्याण एवं सेवा का एक अभिनव प्रयास है। मध्यप्रदेश में 94 हजार 689 वर्ग किलोमीटर वन है और वनक्षेत्र से 5 किमी. दूरी तक के वनों में 15 हजार 228 वन समितियां कार्यरत हैं। स्थानीय लोगों को वनों की सुरक्षा एवं विकास में सहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से बनाई गई यह समितियां दूरदराज के क्षेत्रों में हैं और इन समितियों के माध्यम से ग्रामीणों तक वन विभाग के कर्मचारियों का सतत् सम्पर्क बना रहता है। अत: वनांचलों में जहां अन्य विभागों की पहुँच कम है, वहां शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण इत्यादि में वन विभाग के मैदानी अधिकारियों के द्वारा सेवाभाव से बेहतर सुविधाऐं उपलब्ध कराने के प्रयास किये जा रहे हैं।

स्वास्थ्य विभाग के द्वारा वनरक्षकों के स्वास्थ्य उन्मुखीकरण प्रशिक्षण के लिये प्रदेश स्तर पर मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षित कर विभिन्न वनमंडलों के साथ संलग्न किया गया है। इस योजना के तहत् विभिन्न वृत्तों में एवं राष्ट्रीय उद्यानों में अन्तर्विभागीय बैठकों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के सहयोग से अभी तक वनकर्मियों के कुल 274 प्रशिक्षण आयोजित किये गये हैं, जिसमें 8342 वनकर्मी प्रशिक्षित हुए हैं।

सुदूर वनांचलों एवं वनग्रामों में अब तक 444 स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन हुआ है, जिसमें कुल 49 हजार 971 ग्रामीण लाभान्वित हुये हैं। इन शिविरों के माध्यम से मातृ मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर कम करने एवं जटिल बीमारियों से ग्रसित मरीजों को निकटतम अस्पताल पहुँचाने, गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण कराने, महामारी जैसे गंभीर रोगों की सूचना देने, टीकाकरण, मलेरिया उन्मूलन, किशोरी बालिकाओं के स्वास्थ्य सुधार एवं कुपोषण दूर करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

इस योजना ने बहुत कम समय में अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। डिंडोरी, बैतूल एवं मण्डला जिलों मे संपन्न किये गये स्वास्थ्य शिविरों की उपलब्धियां निम्नानुसार हैं :-

वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार शाहपुर स्वास्थ्य शिविर में गर्भवती महिलाओं की गोदभराई कार्यक्रम में सम्मिलित होते हुए

"FAILURE will never overtake me if my definition to SUCCEED is strong enough"
- APJ Abdul Kalam

दीनदयाल वनांचल सेवा के अन्तर्गत सम्पन्न स्वास्थ्य शिविर

वनमंडल	विकास खण्ड संख्या	पंजीकृत मरीजों की संख्या	वनग्रामों की संख्या	हाई रिस्क प्रेग्नेंसी संख्या	गंभीर एनीमिया के प्रकरण	चिकित्सकों की संख्या	उपस्थित महिलाओं की संख्या
डिंडोरी	7	4204	86	630	126	70	662
मंडला	9	1826	59	522	9	42	226
बैतूल	20	2859	136	1179	345	99	687
योग	**36**	**8889**	**281**	**2331**	**480**	**211**	**1575**

डॉ. श्रीमती किरण शेजवार के द्वारा डिंडोरी जिले के स्वास्थ्य शिविर मे गर्भवती महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बड़ाते हुए

भैंसदेही स्वास्थ्य शिविर मे गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण एवं स्वास्थ्य परीक्षण करते वनकर्मी

बांधवगढ़ के ताला स्वास्थ्य शिविर में डॉक्टर द्वारा स्वास्थ्य परिक्षण

नर्मदा सेवा यात्रा का भव्य समापन

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अमरकंटक में नर्मदा सेवा यात्रा के पूर्णता समारोह में उपस्थित जन–समुदाय का अभिवादन किया। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान भी मौजूद थे।

नर्मदा नदी मध्यप्रदेश की जीवन–रेखा है। यह भारतीय उप महाद्वीप की पाँचवीं सबसे बड़ी नदी होने के साथ ही भारत की सात पवित्र नदियों में से एक है। मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी 16 जिले और 51 विकासखण्ड से होती हुई 1079 किलोमीटर का मार्ग तय करती है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देशन में प्रदेश की जीवनरेखा नर्मदा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन के लिये नर्मदा सेवा यात्रा की शुरूआत 11 दिसम्बर, 2016 को नर्मदा नदी के उद्गम स्थल अमरकंटक से की गई। इस यात्रा में वृक्षारोपण के जरिये नदी तटीय क्षेत्र का संरक्षण, उन्नत स्वच्छता, तरल एवं ठोस अपशिष्ट और सामुदायिक एवं व्यक्तिगत स्वच्छता प्रबंधन, जल–संरक्षण एवं नदी कछार क्षेत्र विकास, प्रदूषण नियंत्रण एवं प्रबंधन, जैविक खेती, नर्मदा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन को आजीविका से जोड़ना, नदी संसाधनों का यथोचित उपयोग, नदी क्षेत्र में स्वस्थ पारिस्थितिकीयतंत्र का विकास, नर्मदा नदी के संरक्षण– संवर्धन के लिये समाज की क्षमता वर्धन एवं सहभागिता सुनिश्चित करना और नर्मदा तटीय क्षेत्र में नशामुक्त समाज के निर्माण जैसे कार्य लक्षित किये गये हैं। यह यात्रा 6 अप्रैल को नरसिंहपुर, 10 अप्रैल को जबलपुर, 20 अप्रैल को मण्डला, 28 अप्रैल को डिण्डौरी, एवं 5 मई को अनूपपुर पहुँची। 15 मई, 2017 को अनूपपुर के अमरकंटक में इस यात्रा का समापन हुआ। नर्मदा सेवा यात्रा जैसे–जैसे अपने अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ रही थी वैसे–वैसे लोगों का उत्साह एवं भागीदारी बढ़ती जा रही थी। इस यात्रा में स्थानीय लोगों के साथ–साथ राजनेता, अभिनेता, पर्यावरणविद्ों एवं समाज के विभिन्न वर्गों का अपार सहयोग प्राप्त हुआ।

यात्रा की झलकियाँ

- नमामि देवि नर्मदे–नर्मदा सेवा यात्रा का शुभारंभ दिनांक 11 दिसम्बर, 2016 को नर्मदा जी के उद्गम स्थल अमरकंटक से हुआ। शुभांरभ कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश शासन, श्री शिवराज सिंह चौहान व माननीय मुख्यमंत्री गुजरात श्री विजय रूपानी के अलावा नेतागण एवं साधु संत उपस्थित रहे।
- दिनांक 11 दिसम्बर, 2016 से दिनांक 15 मई, 2017 तक कुल 148 दिवसों में नर्मदा सेवा यात्रा द्वारा नर्मदा नदी के दोनों तटों पर कुल 3350 किमी. की दूरी तय की गई। यात्रा के दौरान कुल 615 ग्राम पंचायतों, 1100 ग्रामों, 51 विकासखण्डों एवं 16 जिलों में वृक्षारोपण करनें के साथ–साथ नर्मदा जन संवाद का भी आयोजन किया गया।
- यात्रा के दौरान नर्मदा नदी के दोनों तटों पर 1–1 किमी. की दूरी में फलदार एवं छायादार पौधे रोपित किये गये। यात्रा के दौरान सांकेतिकरूप में लगभग 40 हजार पौधों का रोपण किया गया।
- लगभग 25 लाख प्रतिभागियों की उपस्थिति में कुल 1100 जनसंवाद कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- यात्रा का समापन 15 मई को नर्मदा नदी के संरक्षण के संकल्पों के साथ हुआ। समापन कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी उपस्थित रहे।

International Biodiversity Day Celebrations

Madhya Pradesh State Biodiversity Board on 20th May 2017 set into motion a special 3-day programme beginning with a 2-day bird watching and training camp at Kerva, Vanvihar and Kaliasot on May 20th and 21st keeping in focus the theme "Biodiversity and Sustainable Tourism" chosen by the Secretariat of the Convention on Biological Diversity (CBD) to mark the "International Biological Diversity Day" on May 22.

The camp on the first day was led by Additional Principal Chief Conservator of Forests and Member Secretary State Biodiversity Board and former Field Director Panna Tiger Reserve, R. Sreenivasa Murthy. Prominent among those who joined the camp were WWF Madhya Pradesh-Chhattisgarh director Sangeeta Saxena, Director Indira Awas and senior Indian Forest Service Officer and former Field Director Kanha Tiger Reserve, Jasbeer Singh Chouhan, senior journalist Lalit Sastri, Dr. Ankur Awadhiya, IFS, Suresh Waghmare and Umakant Dixit, both retired Deputy Forest Conservators, Mohammad Khaliq and Sangita Rajgir of Bhopal Birds. Several volunteers from WWF and Army also took part.

The theme "Biodiversity and Sustainable

Tourism" had been chosen to coincide with the observance of 2017 as the International Year of Sustainable Tourism for Development as proclaimed by the United Nations General Assembly in its resolution 70/1931 and for which the United Nations World Tourism Organization is providing leadership.

Biodiversity, at the level of species and ecosystems, provides an important foundation for many aspects of tourism. Recognition of the great importance to tourism economies of attractive landscapes and a rich biodiversity underpins the political and economic case for biodiversity conservation. Many issues addressed under the Convention on Biological Diversity directly affect the tourism sector. A well-managed tourist sector

can contribute significantly to reducing threats to, and maintain or increase, key wildlife populations and biodiversity values through tourism revenue.

Celebration of the International Biological Diversity Day under this theme therefore provides an opportunity to raise awareness and action towards the important contribution of sustainable tourism both to economic growth and to the conservation and sustainable use of biodiversity.

A State level event of International Biological Diversity Day 2017 was organized in Bhopal at Academy of Administration on 22nd of May 2017. The theme of the workshop was Biodiversity-Sustainable Tourism and Local livelihoods: Opportunities and Challenges for Madhya Pradesh to realize the Potential.

World Environment Day Celebrations

Pench Tiger Reserve's 'Walk with Nature'

The life in cities today has become very hectic. With the traffic on the rise and the pollution levels increasing, each passing day is becoming more and more stressful. On the occasion of World Environment Day celebrated on 5th June the Pench Tiger Reserve Management made an effort to connect people with nature. It gave them an opportunity to experience some serenity away from the city life. As the international theme was "Connecting with Nature", the management organized a Nature Trail in the Rukhad forest area of Pench Tiger Reserve.

The aim of the nature trail was to make a change in people's perception about the forest. A tourist perception is generally concentrated on the big cats, and hence they neglect all the other minute recordings of flora and fauna present there. This nature trail was organized to target the audience towards the other elements of nature and showing them the work put in conservation of every little species within the park.

The event was open for local participants and therefore various channels like newspapers and various other platforms of social media like Facebook and Twitter were used to reach out to the public. The participants were a group of about 35 people both young and old. They could see every microscopic detail of the forest. From the fig-fly that ripens the fruit to the antlers shed by the deer, eaten bark of the trees, importance of unique rock habitats, the termite hill and ant hill, and all other observations were described. The mechanism of forest was explained in a short span. They were also acknowledged with participation certificates and caps.

The target listeners were explained how everything is interdependent inside and outside of the forest. They were given a glimpse of the intensity of damages to the forest done by mankind, and after this enriching educational experience it is expected that the audience will help reducing this damage by connecting to the nature.

हरियाली महोत्सव के संदेश

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

संदेश

हर्ष का विषय है की पौधरोपण के प्रति जन जागरुकता लाने के लिये हरियाली महोत्सव मनाया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की अराधना की परंपरा है, जीवन में संतुलन के लिये पर्यावरण में संतुलन आवश्यक है। हरियाली प्रत्येक जीव की जीवन रक्षा का कवच है। इस वर्ष नर्मदा सेवा यात्रा के दौरान जागरुक ग्रामीण समुदाय ने माँ नर्मदा की सेवा करने और हरियाली को समृद्ध करने का संकल्प लिया है। नागरिकों के सहयोग से आगामी दो जुलाई को छः करोड़ पौधे रोपे जायेंगे इनकी रक्षा करने की साझा जिम्मेदारी हम सबकी है।

राज्य सरकार वनों के संरक्षण और विकास के लिये प्रतिबद्ध है। मुझे विशवास है की वानिकी विकास योजनाओं से जहां रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे, वही हरियाली का भी विस्तार होगा।

सभी नागरिकों से आग्रह है की पौधरोपण के महत्वपूर्ण काम को जान आंदोलन का रूप दें और पौधे की सुरक्षा कर, उन्हें स्वस्थ्य वृक्ष बनाने का संकल्प लें।

शुभकामनाओं सहित।

(शिवराज सिंह चौहान)

डॉ गौरीशंकर शेजवार
मंत्री
मध्यप्रदेश शासन
वन, योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग

संदेश

पौधारोपण के प्रति जनसाधारण में जागरुकता लाने के लिये प्रतिवर्ष वन महोत्सव मनाया जाता है। प्रदेश में हरियाली महोत्सव के द्वारा इसको व्यापक आधार दिया गया है। प्रदेश में नमामि देवी नर्मदे सेवा यात्रा के बाद अब 2 जुलाई को वृहद स्तर पर पौधारोपण का कार्य आयेजित किया गया है।

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के कुशल नेतृत्व में मध्यप्रदेश में वनों के संवहनीय विकास के साथ वनवासियों को वनोपज पर आधारित रोजगार के नये अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष बल दिया गया है। इस दिशा में अनेक नई योजनाएं प्रारंभ की गई हैं। वन प्रबंधन के तहत प्रदेश में पन्द्रह हजार से अधिक वन समितियां गठित की गई हैं। ये वन समितियां विभाग के साथ जुड़कर वन संवर्धन और सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में इसके उत्साह जनक परिणाम सामने आए हैं।

हरियाली महोत्सव के अवसर पर आप सभी से अपील है कि वन विकास की योजनाओं में सक्रिय भागीदारी देकर इनको सफल बनाने में सहयोग करें। आप पौधारोपण के लिये उपयुक्त पौधे निकटतम वन रोपणी से प्राप्त कर सकते हैं। पंचायत संस्थाओं, शिक्षण तथा स्वैच्छिक संगठनों की इसमें महति भूमिका है।

हरियाली महोत्सव–2017 की सफलता के लिये शुभकामनाएं।

(डॉ. गौरीशंकर शेजवार)

सूर्य प्रकाश मीणा
राज्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन
उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण
(स्वतंत्र प्रभार) एवं वन

संदेश

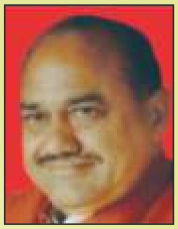

वन तथा प्रकृति के प्रति जनचेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष हरियाली महोत्सव मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति की परंपरा अनुसार हमें पौधे लगाने और उनकी सुरक्षा में पूरा सहयोग करना होगा, तभी हम भावी पीढ़ी को स्वच्छ पर्यावरण दे पायेंगे।

प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के कुशल नेतृत्व में वनों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में प्रभावी पहल हुई, जिसका लाभ प्रदेशवासियों को मिल रहा है।

हरियाली महोत्सव को जन आंदोलन का स्वरूप देने के लिये प्रदेश में इस वर्ष दो जुलाई को छः करोड़ पौधे लगाये जायेंगे। इस रोपण कार्य में जनप्रतिनिधि, शासन के विभिन्न विभागों के अधिकारी तथा कर्मचारी एवं अन्य आम नागरिक भाग लेंगे।

हरियाली महोत्सव के अवसर पर इस अच्छे काम की पहल करें। इस काम में पंचायत संस्थाओं, शिक्षण संस्थाओं तथा स्वयंसेवी संगठनों को अपनी भूमिका का निर्वहन पूरी निष्ठा और सक्रियता के साथ करना होगा।

शुभकामनाओं सहित,

(सूर्य प्रकाश मीणा)

राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स भोपाल एवं क्षेत्रीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स इकाइयों द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य

राज्य स्तरीय स्ट्राइक फोर्स एवं क्षेत्रीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स इकाइयों एवं स्थानीय लोगों की मदद से प्रदेश में शिकारियों पर नकेल कसी जा रही है। विगत माह में कई शिकारियों को टाइगर स्ट्राइक फोर्स द्वारा त्वरित कार्यवाही कर जेल भिजवाया गया है, जिसका विवरण निम्न है।

देवास : दिनांक 3 अप्रैल, 2017 को देवास जिले के कुशमानिया गाँव के पास से दो आरोपियों को तेन्दुए की खाल सहित गिरफ्तार किया गया। प्रकरण 28060/01 जारी कर आरोपियों को माननीय विशेष न्यायालय इंदौर में पेश कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया।
यह कार्यवाही राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स म.प्र. भोपाल एवं क्षेत्रीय इकाई इंदौर एवं होशंगाबाद के द्वारा की गई।

सतना : दिनांक 10 अप्रैल, 2017 को महाराष्ट्र के कुख्यात फरार तीन शिकारी को सतना जिले के उचेंहरा में राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स द्वारा गिरफ्तार कर सी.बी.आई. महाराष्ट्र के सुपुर्द किया गया। उक्त तीनों आरोपी वर्ष 2013 से फरार थे।

बैतूल : दिनांक 20 अप्रैल, 2017 को बैतूल जिले में बाघ के शिकार प्रकरण 36/44 में लिप्त सात आरोपियों को गिरफ्तार किया गया, जिसमें दो आरोपियों को महाराष्ट्र के परतवाड़ा से गिरफ्तार किया गया। शिकारियों के पास से तीन भरमार बंदूकें भी जप्त की गई हैं। यह कार्यवाही राज्य स्तरीय टाइगर स्ट्राइक फोर्स भोपाल एवं टाइगर स्ट्राइक फोर्स होशंगाबाद की टीम के संयुक्त प्रयासों से की गई।

श्योपुर : दिनांक 5 जून, 2017 को श्योपुर नगर के सवाईमाधोपुर रोड पर सलापुरा नहर के पास से दो आरोपियों को तेन्दुए की खाल के साथ गिरफ्तार किया गया। शिकारियों के पास से शिकार में प्रयोग किए गये औजार एवं वन्यजीवों के अवशेष भी जप्त किये गये हैं व आरोपियों को विशेष न्यायालय सागर में पेश कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया।

खरगौन : दिनांक 15 जून, 2017 को इन्दौर एवं खरगौन में ऑनलाइन वन्यजीवों के अंगों की तस्करी की सूचना मिलने पर WCCB जबलपुर, STF Wildlife– भोपाल, STF Police इन्दौर, TSF इन्दौर एवं खरगौन वनमण्डल के संयुक्त कार्यवाही से आरोपियों को पकड़ा गया तथा उनसे भारी मात्रा में हत्थाजोड़ी एवं सियारसिंगी जप्त किये गये एवं आरोपियों को प्रकरण 1729/25 के तहत जिला न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की गतिविधियां

विद्यार्थियों का टिश्यू कल्चर तकनीक पर प्रशिक्षण

वन अनुवांशिकीय, जैव प्रौद्योगिकी एवं पादप उत्तक संवर्धन पर प्रशिक्षण

संस्थान के वन अनुवांशिकीय एवं जैव प्रौद्योगिकी शाखा द्वारा मेवाड़ विश्वविद्यालय, राजस्थान के कृषि एवं पशु विज्ञान विभाग द्वारा प्रयोजित 28 स्नातक विद्यार्थियों को वन अनुवांशिकीय, जैव प्रौद्योगिकी एवं पादप उत्तक संवर्धन विषय पर 6 जून से 6 जुलाई तक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समूह में नागालैण्ड, राजस्थान तथा म.प्र. के विद्यार्थी सम्मिलित हुए। इस प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को Tissue Culture, DNA isolation, Biotechnology पर प्रयोगशाला तकनीकों की जानकारी प्रदान की गई।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की 43वीं अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष एवं प्र.मु.व.सं., वन बल प्रमुख, म.प्र. एवं समिति के अन्य सम्मानीय सदस्य तथा संस्थान के वैज्ञानिक गण।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की 43वीं अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 12 जून, 2017 को डॉ. अनिमेष शुक्ला, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख की अध्यक्षता में सतपुड़ा भवन, भोपाल में आयोजित की गई। बैठक के दौरान 49 नवीन प्रस्तावित परियोजनाओं. 35 प्रचलित परियोजनाओं तथा 26 पूर्ण की गई परियोजनाओं का प्रस्तुतिकरण किया गया। बैठक की कार्यवाही का संचालन संस्थान के संचालक डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा द्वारा किया गया।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा प्रचलित नवीन परियोजनाएं

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व, मध्यप्रदेश की खाली जगहों में वन्यजीवों के निवास स्थान में सुधार के प्रबंधन हस्तक्षेप की भूमिका

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व से विस्थापित किये गए ग्रामों में हुए प्रबंधन कार्यो एवं उन ग्रामों में जहाँ पर प्रबंधन कार्य नहीं हुए हैं, का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना है एवं शाकाहारी वन्यप्राणियों के लिए प्रजातिवार Habitat Suitability Model तैयार करना है। जून माह में सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में हाल ही में विस्थापित हुए ग्राम सोनपुर, मल्लूपुरा एवं सकई का सर्वेक्षण कार्य किया गया। इन ग्रामों में वनस्पति, घास, खरपतवार, वन्यप्राणी साक्ष्यों, विभाग द्वारा किए गए घास प्रबंधन, वन्यप्राणी प्रबंधन कार्यो का सर्वेक्षण कार्य किया जा रहा है।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा प्रकाशित विस्तार बुलेटिन का विमोचन

माननीय मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन व माननीय वन मंत्री, म.प्र. शासन द्वारा तकनीकी बुलेटिन एवं सीडी का विमोचन।

संस्थान द्वारा ''नर्मदा तट पर वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ एवं रोपण विधियाँ'' पर प्रकाशित विस्तार बुलेटिन क्रमांक 50 एवं सी.डी. का विमोचन दिनांक 2 जून, 2017 को EPCO परिसर, भोपाल में माननीय मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन श्री शिवराज सिंह चौहान, द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. गौरीशंकर शेजवार, माननीय वन मंत्री, म.प्र. शासन, श्री बी.पी. सिंह, मुख्य सचिव एवं डॉ. अनिमेष शुक्ला, प्र.मु.व.सं., वन बल प्रमुख एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस विस्तार बुलेटिन एवं वीडियो में नर्मदा नदी के संरक्षण, जल संरक्षण एवं विकास हेतु दोनों तटों पर 2 जुलाई, 2017 को होने वाले वृक्षारोपण हेतु तकनीकी जानकारी एवं उपयुक्त प्रजातियों का सचित्र विवरण दिया गया है।

19वीं कॉमनवेल्थ फॉरेस्ट्री कॉन्फ्रेंस में राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की सहभागिता

वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला द्वारा कांन्फ्रेंस में सम्मिलित होकर प्रदेश के अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों का उत्साहवर्धन किया गया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में दिनांक 3 से 7 अप्रैल, 2017 तक आयोजित 19वीं कॉमनवेल्थ फॉरेस्ट्री कॉन्फ्रेंस में राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा सक्रिय रूप से भाग लिया गया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा कॉन्फ्रेंस प्रदर्शनी में स्टाल लगाकर संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया, जिसमें संस्थान द्वारा प्रकाशित तकनीकी ब्रोशर, बुलेटिन तथा अनुसंधान गतिविधियों को पोस्टरों के माध्यम से आगंतुकों को अवगत कराया। साथ ही संस्थान से डॉ. पी.के. शुक्ल, अध्यक्ष, जनरल ऑफ ट्रॉपिकल फॉरेस्ट्री, डॉ. प्रतिभा भटनागर, वैज्ञानिक, डॉ. ज्योति सिंह, श्रीमती ऋचा सेठ, श्री अनिरूद्ध सरकार, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारियों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

सरदार सरोवर परियोजना मध्यप्रदेश के आस-पास क्षेत्र में वन्यजीव आवास सुधार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट

इस परियोजना में सरदार सरोवर परियोजना के डूब क्षेत्र से जुड़े क्षेत्र में वन्यप्राणी रहवास विकास कार्य हेतु डी.पी.आर. तैयार किया जाना है। परियोजना क्षेत्र के अंतर्गत् माथवाड़ तथा बोकराटा वन परिक्षेत्र का रैकी सर्वे कर लगभग 230 कक्षों के इतिहास की जानकारी, जैसे वन्यप्राणी की संख्या, वन्यप्राणियों के प्राकृतिक आवास, वनस्पतियों के प्रकार, मृदा एवं कक्ष में अतिक्रमण इत्यादि के आधार पर 6000 हेक्टेयर क्षेत्र का चयन कर, क्षेत्र से संबंधित विभिन्न मानचित्र, टोपोशीट, क्षेत्र कार्ययोजना की जानकारी एकत्र की गई है।

दिनांक 27 अप्रैल, 2017 को केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री अनिल माधव दवे ने बरखेडा पठानी स्थित लघु वनोपज प्र-संस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र परिसर पर रूद्राक्ष का पौधा लगाया।

केन्द्रीय पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा लघु वनोपज प्रसंस्करण केन्द्र का निरीक्षण

केन्द्रीय पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री अनिल माधव दवे ने दिनांक 27 अप्रैल, 2017 को प्रसंस्करण केन्द्र, बरखेड़ा पठानी, भोपाल का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि विन्ध्य हर्बल उत्पाद ने आयुर्वेद के क्षेत्र में अच्छा काम किया है। इस अवसर पर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन बल प्रमुख) डॉ. अनिमेष शुक्ला, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ श्री जव्वाद हसन तथा वरिष्ठ वन अधिकारी उपस्थित थे।

दिनांक 27 अप्रैल, 2017 को केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री अनिल माधव दवे ने बरखेडा पठानी स्थित लघु वनोपज संस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र का निरीक्षण करते हुए।

नवाचार

मध्यप्रदेश ईकोपर्यटन विकास बोर्ड द्वारा अतिथि सत्कार प्रशिक्षण का आयोजन

मध्यप्रदेश ईकोपर्यटन विकास बोर्ड द्वारा वन विभाग में ईकोपर्यटन एवं आतिथ्य गतिविधियों से जुडे. श्रमिकों व कर्मचारियों की क्षमता विकास हेतु मध्यप्रदेश स्टेट इन्स्टीट्यूट ऑफ हॉस्पिटालिटी ट्रेनिंग भोपाल में पर्यटन एवं सत्कार प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 6 अप्रैल 2017 से 11 अप्रैल 2017 तक आयोजित किया गया हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य श्रमिकों व कर्मचारियों में अतिथि देवो भव: की भावना को विकसित करना है, ताकि वे आगन्तुकों से सौम्यतापूर्वक व्यवहार करें तथा उन्हें गुणवत्तापूर्ण सेवायें प्रदान कर सकें। इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाना, सब्जी काटना, खाना परोसना, हाऊसकीपिंग, वार्ता कौशल, आतिथ्य सत्कार, आदि विषयों पर विस्तृत प्रशिक्षण एवं जानकारी संस्थान के विशेषज्ञों द्वारा दी गई। यह प्रशिक्षण ईकोपर्यटन गतिविधियों को संचालित करने हेतु अत्यन्त लाभप्रद है जिसमें दूरस्थ वनमंडलों में कार्यरत युवाओं को आधुनिक व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त हो रही है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से 91 श्रमिक एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

बांसापुरा रोपणी में पौधों को जानवरों से बचाने के लिए अनूठी पहल

आजकल वन्य जीवों जैसे चीतल, नीलगाय, बंदरों का प्रकोप फसलों पर बढ़ता जा रहा है, जिससे कृषकों को हानि उठानी पड़ जाती है। वन मंडल सीहोर के अंतर्गत वन परिक्षेत्र बुधनी में अनुसंधान एवं विस्तार भोपाल की बांसापुरा रोपणी भी इसी प्रकार की समस्या से ग्रसित थी। यहां के रोपणी प्रभारी श्री आशीष खापरे ने इस समस्या से निजात पाने के लिए नई अनूठी पहल की शुरूआत की है।

शीशम, सुबबूल, नीम, गुलमोंहर आदि प्रकार के पौधों को बंदर नुकसान पहुंचाते हैं। बंदरों के इस प्रकोप से पौधों को सुरक्षित रखने के लिए श्री आशीष खापरे ने अनोखा हल निकाला। बंदरों को भगाने के लिए लाल टोपी पहनकर गोफन को तेजी से घुमाकर बंदरों की ओर चलाया जाता है। यह प्रक्रिया के लगातार करने से गोफन का डर बंदरों में इस कदर बैठ गया कि कालान्तर में लाल टोपी देखकर बंदर डर कर भाग जाते हैं। इस प्रकार नर्सरी को बंदर के प्रकोप से छुटकारा मिल गया।

श्री आशीष खापरे
बासापुरा रोपणी प्रभारी

चीतल, नीलगाय, हिरण व अन्य ऐसे जानवरों से महुआ, अचार, आँवला आदि पौधों की रक्षा करने के लिए एक प्रभावी विधि का प्रयोग भी श्री आशीष खापरे ने खोज निकाला। इसमें ''नान स्टॉप'' नामक स्टिकिंग एजेन्ट जो की कीटनाशकों को पौधों में चिपकाने के काम आता है, की 20 मिली. मात्रा को 15 लीटर पानी एवं मिर्च का घोल बनाकर पौधों पर छिड़कते हैं। मिर्च की गंध के कारण जानवर पौधों के पास नहीं आते हैं, जिससे पौधे सुरक्षित रहते हैं। इस घोल से पौधों को भी किसी प्रकार से हानि नहीं होती है। मिर्च की जगह नीम के तेल का प्रयोग भी किया जा सकता है। इसके प्रयोग से जानवरों को भी किसी प्रकार की हानि नहीं होती है। इन दो सफल प्रयोगों के कारण बांसापुरा नर्सरी के पौधों को जंगली जानवरों से हो रहे नुकसान से काफी राहत मिली है। इस प्रकार किसान भी सरल एवं कम खर्चीले उपरोक्त प्रयोगों के माध्यम से जंगली जानवरों से फसलों को सुरक्षित कर सकते हैं।

व्हाईट हाउस की सुरक्षा करने वाले बेल्जियम मेलेनॉईस श्वान करेंगे मध्यप्रदेश के बाघों की सुरक्षा

दिनांक 21 मई, 2017 को वन विहार, भोपाल में ''स्निफर कम ट्रेकर डॉग स्कॉड प्रोजेक्ट फॉर मध्यप्रदेश फोरेस्ट डिपार्टमेंट'' नाम से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कोलकाता में स्थित सेविंग टाइगर संस्था द्वारा चार बेल्जियम मेलेनॉईस श्वान राज्य को सौपाने की घोषणा की गई। बेल्जियम मेलेनॉईस श्वान की एक बेहद बुद्धिमान नस्ल है।

विशेषज्ञों का कहना है कि बेल्जियम मेलेनॉईस श्वान की सूंघने की क्षमता अन्य प्रजाति के कुत्तों से बेहतर होती है, जिससे यह श्वान विषम परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। इन्हें गश्ती दल एवं विशेष टाइगर स्ट्राइक फोर्स व क्षेत्रीय वन अधिकारियों को शिकार की जांच के मामलों में मदद के लिए शामिल किया जा रहा है। इन श्वानों को भोपाल की विशेष सशस्त्र बल के 23वीं बटालियन के पुलिस श्वान ट्रेनिंग सेंटर में 9 महीने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

कान्हा टाइगर रिजर्व में प्रदेश का सबसे बड़ा बोमा

प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों में जंगली जानवरों जैसे चीतल, बारासिंगा, नीलगाय आदि की संख्या में वृद्धि की बजह से उनकी शिफ्टिंग जरूरी हो गई है। इसी प्रक्रिया में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान मे सबसे बड़े बोमा का निर्माण किया गया, जिसका कुल क्षेत्रफल 2.9 हेक्टेयर है। यह प्रदेश का अभी तक का सबसे बड़ा बोमा है।

कान्हा में वर्ष 2016 से अब तक कुल 780 चीतल शिफ्ट किए जा चुके हैं। कान्हा से चीतलों की शिफ्टिंग भौसनघाट और आस–पास के जंगलों में की जा रही है।

बोमा पद्धति में तीर के आकार की संरचना तैयार की जाती है। चौड़े वाले हिस्से से जानवर को भगाया जाता है और धीरे धीरे जानवर एक जगह इकठ्ठा होने लगते हैं। अंतिम कोने तक पहुंचाने से पहले वाहन को कुछ इस तरह से खड़ा किया जाता है कि उसका दरवाजा बोमा के अंतिम छोर पर जाकर खुले। जब जानवरों को कहीं ओर भागने का मौका नहीं मिल पाता तो वे वाहन के दरवाजे को खाली जगह समझकर उसमें चले जाते है। जानवर के अन्दर चले जाने के बाद गेट को तत्काल बंद कर दिया जाता है। इस तरह जानवरों को बोमा विधि से शिट किया जाता है।

बीज बचाओ, कृषि बचाओ यात्रा

प्रदेश की भूली–बिसरी बीजों की प्रजातियों के संरक्षण, संवर्धन हेतु मध्यप्रदेश राज्य जैव–विविधता बोर्ड एवं कृषि विभाग के संयुक्त तत्वावधान में बीज बचाओ, कृषि बचाओ सह बीज अपनाओ यात्रा का शुभारंभ 02 मई, 2017 को प्रदेश की राजधानी भोपाल से मध्यप्रदेश राज्य जैव–विविधता बोर्ड भोपाल द्वारा आर.सी.व्ही.पी. नरोन्हा प्रशासन अकादमी भोपाल में श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव, म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल, श्री मोहन लाल मीणा, संचालक, कृषि विभाग, डॉ. बकुल लॉड, प्रबंधक (बायो), डॉ. एलिजाबेथ थॉमस, प्रबंधक (प्रोजेक्ट) मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, एवं श्री श्याम बोहरे, प्राध्यापक (से.नि.) द्वारा छः सदस्यीय टीम को हरी झंडी दिखाकर किया गया। यह यात्रा दो चरणों में पूर्ण हुई। इसका पहला चरण 2 मई, 2017 से 10 जून, 2017 तक चला व दूसरा चरण 17 जून, 2017 से 6 जुलाई, 2017 चला। मध्यप्रदेश के 40 जिलों में 56 चौपालों के माध्यम से देशज बीजों एवं जैविक खेती सहित जैव–विविधता की अलख जगाने वाली यह यात्रा अपनी तरह की अनूठी एवं प्रदेश के बड़े भू–भाग को समाविष्ट करने वाली रही, जिसमें प्रत्यक्षरूप से लगभग 1411 किसानों, कृषि विशेषज्ञों सहित खेती किसानी में रुचि लेने वाले लोगों ने प्रतिभागिता की। यात्रा के दौरान न सिर्फ विलुप्तप्राय: प्रजाति के देशज बीज बड़ी संख्या में प्राप्त हुए, वरन् जैविक किसानों की पहचान, स्थानीय जैवविविधता, संस्कृति, रहन–सहन एवं परंपराएँ, पशु, जलवायु दशाएँ, मिट्टी, जल संसाधन सहित वैविध्यपूर्ण विशेषताएँ देखने को मिलीं।

बीज बचाओ, कृषि बचाओ सह बीज अपनाओ यात्रा

यात्रा–पथ

यात्रा के उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में यात्रा के दौरान न सिर्फ बड़ी मात्रा में पारंपरिक देशी बीजों की प्रजातियों का संग्रहण किया गया वरन् ऐसे जैविक कृषक, जैव–विविधता के संरक्षण, संवर्धन में रुचि रखने वालों को भी चिन्हित किया गया जो स्वेच्छा से इस कार्य में लगे हुए हैं।

कुल जिले	आयोजित चौपाल	यात्रा दिवस	प्राप्त बीज प्रजातियां	बीजों के कुल नमूने
40	56	56	166	2052

यात्रा के अंतर्गत् गतिविधियाँ :

1. वर्तमान में उपलब्ध कृषि जैवविविधता का दस्तावेजीकरण करना (पारंपरिक किस्में एवं उन्नत किस्में)।
2. कृषि की पारंपरिक किस्मों के बीजों को एकत्रित करना।
3. परंपरागत खेती करने वाले कृषकों की सूची तैयार करना।
4. पारंपरिक बीज बचाओ अभियान हेतु स्थानीय लोगों को चिन्हित करना।
5. स्थानीय जड़ी बूटियों एवं उनके उपयोगों का सूचीकरण।
6. घरेलू पशुओं की स्थानीय नस्लों का दस्तावेजीकरण।
7. क्षेत्र की विशिष्ट/खास प्रजातियों एवं किस्मों का सूचीकरण।
8. ग्राम पंचायत स्तर पर जैवविविधता प्रबंधन समितियों के गठन हेतु जागरुकता उत्पन्न करना।

कृषक समृद्धि में बांस की भूमिका

मध्यप्रदेश राज्य बांस मिशन कृषकों के माध्यम से बांस उत्पादन को बढ़ावा दे रहा है। इसी तारतम्य में 27 जुलाई, 2016 को हरदा जिले के कृषक श्री सरदार बाहरे के अपने एक हेक्टेयर क्षेत्र में बांस खेती का प्रदर्शन प्लाट विकसित करने के लिये बांस मिशन के निर्देशन में वन मंडल हरदा द्वारा करारनामा किया। इसके तहत् मिशन के तकनीकी मार्गदर्शन में ग्रोमोर इंडिया प्रायवेट लिमिटेड हसूर, तमिलनाडु द्वारा विकसित की गई बांस की किस्म भीमा बांस (Bambusa balcoa) के टिशु कल्चर के क्लोनल पौधों का रोपण किया। यह रोपण 3×2 मीटर के अंतराल पर किया गया। इसमें 3 मीटर के अंतराल में खरीफ में उड़द–बांस एक साथ लगाया गया, परन्तु वर्षा अधिक होने से उड़द की फसल खराब हो गई। उड़द का मात्र 2 क्विंटल उत्पादन प्राप्त हुआ परंतु बांस के रोपित 1670 पौधे बढ़ते रहे।

अक्टूबर 2016 में कृषक ने उसमें गेहूँ की फसल (3 मीटर में) बोई। दिसम्बर माह तक बांस के पौधे 2 से 3 मीटर ऊँचाई हो गई तथा प्रत्येक भिर्रे से 3 कर्ले निकल चुके थे, जिनकी कालर गोलाई 9 से.मी. तक थी। मार्च में गेहूँ की फसल ली गई जिसका उत्पादन 23 क्विंटल हुआ। तब तक पूरे खेत में 40 प्रतिशत हिस्से में बांस ने स्थान घेर रखा था तथा 60 प्रतिशत हिस्से में गेहूँ ने स्थान घेरा हुआ था। इस प्रकार गेहूँ का उत्पादन 38 क्विंटल/हे. हुआ जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है।

जून 2017 में बांस फसल की बढ़त का विश्लेषण किया गया जिसके अनुसार 12 से.मी. कालर गोलाई से ऊपर 2000 बांस, 9–12 से.मी. कालर गोलाई तक 2500 बांस तथा 9 से.मी. कालर गोलाई से कम 3200 बांस पाये गए। इस प्रकार 1650 भिर्रो में 4.67 बांस प्रति भिर्रा स्थापित हो चुके थे। प्रति हेक्टेयर 7700 कर्ला बांस एक ही वर्ष में निकलना अपने आप में रिकॉर्ड है।

वर्तमान में उपरोक्त बांस खेती को देखकर हरदा, देवास, बड़वानी, धार, रतलाम, सागर, सतना, बैतूल व भोपाल जिले के कृषकों द्वारा भी एक–एक हेक्टेयर में कुल 22 हेक्टेयर में बेम्बूसा बालकुआ के टिशु कल्चर के पौधों का रोपण जुलाई 2017 में किया गया है। यह प्रदर्शन प्लाट धीरे–धीरे प्रदेश के कृषकों में बांस खेती की ओर बड़ी तेजी से आकर्षित कर रहा है।

हरदा जिले के कृषक श्री सरदार बाहरे द्वारा विकसित किया गया प्रदर्शन प्लाट का 25 मई, 2017 को लिया गया छायाचित्र।

सफलता की कहानी

ईंधन की आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम-ऊर्जावन

प्रेमपुर भालीवाड़ा ग्राम सिवनी जिले के उत्तर सिवनी वनमण्डल में स्थित है। इस ग्राम में कुल 137 परिवार निवास करते हैं, जिसमें से कुल 68 परिवार गरीबी रेखा से नीचे आते है। अधिकांश ग्रामवासी रोजगार के लिए मजदूरी पर निर्भर हैं, एवं ईंधन के लिये जलाऊ लकड़ी का उपयोग करते हैं। पहले प्रेमपुर भालीवाड़ा ग्राम के आसपास राजस्व भूमि एवं वनभूमि में सघन वन थे जिससे ग्रामवासियों का निस्तार आसानी से हो रहा था। किसी समय भालीवाड़ा में 70 दूध की भट्टी थीं जिसमें सारंगपुर, भजिया, गोरखपुर, बरेला, घाट पिपरिया, मूड़ापार, सारंगपुर, सुकवाह, केवलारी, सहसना, चुरका, सेजवाड़ा से रोजाना 700 लीटर दूध लाकर खोवा बनाने का कार्य किया जा रहा था। इन भट्टियों के कारण वनों पर अत्याधिक दबाव पड़ा। इस कारण धीरे-धीरे वन क्षतिग्रस्त होते चले गये। इससे खोवा भट्टी एवं खाना बनाने के लिये भी लकड़ी मिलना बंद हो गई। जलाऊ लकड़ी न मिलने के कारण अब गोबर से कण्डे बनाकर खाना बनाया जा रहा था। यह ग्राम वनसीमा से 5 कि.मी. के अंदर आता था, पर आस-पास और ग्राम होने के कारण इन्हें वनभूमि सुरक्षा हेतु आबंटित नहीं की गई थी। वर्ष 2000 में वनमंडल अधिकारी, उत्तर सिवनी वनमंडल द्वारा पहल कर यहाँ पर संयुक्त वन प्रबंधन के तहत कार्य प्रारंभ करते हुए ग्राम वन समिति गठित कर पंजीकरण क्रमांक – K/V.F.C. 313 दिनांक 19.11.2000 से पंजीकृत किया गया। ग्रामवासियों ने भी उत्साह से कार्य करते हुए राजस्व क्षेत्र खसरा नंबर 160, पटवारी हल्का नंबर-52 में उपलब्ध वृक्षों एवं भूमि को अतिक्रमण से सुरक्षित रखना शुरू किया।

परिक्षेत्र में पदस्थ परिक्षेत्राधिकारी श्री गोपाल सिंह द्वारा ग्राम में लगभग 20 बैठकें ली गईं। विस्तृत चर्चा के आधार पर ऊर्जावन हेतु 5.00 हेक्टेयर क्षेत्र का चयन कर जलाऊ लकड़ी की पूर्ति हेतु सूबबूल के बीजों का रोपण वर्ष 2007 में किया गया। वर्ष 2008 में पुनः 5 हेक्टेयर राजस्व क्षेत्र का चयन कर सुबबूल का रोपण किया गया। रोपण के अंतर्गत भूमि की गहरी जुताई कर सुबबूल के बीजों को 1.5×1.5 मीटर के अंतराल पर स्टेकिंग के उपरांत रोपित किया गया। क्षेत्र की सुरक्षा समिति के सहयोग के साथ-साथ पशु अवरोधक दीवार बनाकर की गई है। वर्ष 2007 के रोपण (प्रथम भाग) पर 491383.00 रुपये तथा वर्ष 2008 के रोपण (द्वितीय भाग)

ऊर्जा वन का अवलोकन करते हुए वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला

पर 496614.00 रुपये व्यय किये गये हैं।

रोपण क्षेत्र अच्छे ढंग से विकसित होने पर ग्रामीणों ने स्वविवेक से इसके वैज्ञानिक प्रबंधन का निर्णय लिया। वर्ष 2015 में उपरोक्त वृक्षारोपण क्षेत्र 10 हेक्टेयर को 03 समान भागों में बांटकर ग्रामीणों ने 03 कूप बनाये एवं क्रमांक 1 कूप में स्वयं मार्किंग कर सबसे अधिक गोलाई के वृक्षों को मार्क किया, कम गोलाई के वृक्षों को मार्क नहीं किया गया, जो अगले 3 वर्षों में पुनः कटाई योग्य हो जायेंगे। ग्रामीणों की यह वन प्रबंधन विधि उन्हीं की सोच का परिणाम है। प्रथम कूप में 1900 सूबबूल वृक्षों की मार्किंग कर कटाई की गई जिससे 123 जलाऊ चट्टे एवं 60 बल्ली प्राप्त किए। चट्टों को 300 रुपये प्रति चट्टे एवं बल्ली 60 रु. के हिसाब से भालीवाड़ा ग्राम के निवासियों को विकय किया गया। 100 रुपये प्रति चट्टे के हिसाब से चट्टे बनाने वाले मजदूरों को भुगतान किया गया।

चट्टा विक्रय से प्राप्त राशि का उपयोग वृक्षारोपण के प्रबंधन में किया जा रहा है। इसके अंतर्गत चौकीदार रखकर

वृक्षारोपण की सुरक्षा की जा रही है। पुराने काटे गये वृक्षों में कई वापस आ गये हैं, जिनकी सिंगलिंग हेतु समिति सदस्यों को समझाइश दी गई है। चारा काटते समय बीज से अंकुरित सूबबूल के पौधों को ग्रामीण स्वयं सुरक्षित कर रहे हैं, जो भविष्य में सतत् उत्पादन बनाये रखने में सहायक होगा। पर्याप्त जलाऊ लकड़ी मिलने के कारण गोबर से कंडे को ईधन के रूप मे उपयोग न करके खेतों में गोबर खाद डाला जा रहा है, जिससे कृषि उपज में वृद्धि हो रही है। कृषि उपज खरीफ में 4 क्विंटल प्रति एकड़ से बढ़कर 6 क्विंटल प्रति एकड़ वृद्धि हुई है। इसी प्रकार रबी की फसल में 3 क्विंटल प्रति एकड़ से बढ़कर 4.5 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्धि हुई है। ऊर्जावन से ग्रामीण घास लाकर दुधारू पशुओं को दे रहे हैं एवं सीमित मात्रा में सूबबूल के पत्ते भी दे रहे हैं, जिससे दूध का उत्पादन बढ़ रहा है। दूध का औसत उत्पादन 2 लीटर से बढ़कर 4 लीटर प्रति दुधारू पशु हो गया है। वृक्षों के प्रति उत्पन्न जागरुकता से अधिकांश ग्रामीणों ने खोवा बनाना छोड़कर डेयरी में सीधे दूध प्रदाय प्रारंभ कर दिया है। इससे प्रेमपुर भालीवाड़ा के ग्रामीणों द्वारा जलाऊ के लिए वनों को की जाने वाली क्षति पर वर्तमान में ग्रामीणों द्वारा अपनाई गई कूप नंबर–I, II, III की पद्धति से उक्त वृक्षारोपण क्षेत्र से हर वर्ष लगभग 100 चट्टे एवं 50 बल्ली लगातार मिलने के संभावना है।

पेड़ लगाओ देश बचाओ, पेड़ लगाओ जीवन बचाओ, जीवन खुशहाल बनाओ।

"Don't take REST after your FIRST VICTORY because IF you FAIL in SECOND, more LIPS are WAITING to SAY that your FIRST VICTORY was just LUCK"

- APJ Abdul Kalam

विविधा

मुख्यमंत्री श्री चौहान को राज्य वन विकास निगम ने 111 करोड़ 44 लाख का चेक सौंपा

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान को मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम द्वारा राज्य शासन को देय लाभांश राशि 111 करोड़ 44 लाख रुपये का चेक दिनांक 1 अप्रैल, 2017 को सौंपा गया। इस मौके पर वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार निगम के अध्यक्ष श्री गुरूप्रसाद शर्मा और अपर सचिव, वन श्री दीपक खांडेकर उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने निगम की उपलब्धियों पर आधारित पुस्तिका का विमोचन भी किया। यह पहली बार है जब निगम के द्वारा 100 करोड़ रुपये से अधिक का लाभांश दिया गया है। निगम लाभ की स्थिति में है तथा वन विभाग के माध्यम से लगभग 40 लाख मानव दिवसों का रोजगार सृजित किया गया है।

इस अवसर पर निगम के प्रबंध संचालक श्री रवि श्रीवास्तव और प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. अनिमेष शुक्ला भी उपस्थित रहे।

ईकोपर्यटन बोर्ड ने शुरू की ऑनलाइन बुकिंग सेवा

22 मई, 2017 को अंतर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस के अवसर पर मध्यप्रदेश ईकोटूरिज्म बोर्ड ने प्रकृति प्रेमियों के लिये ऑनलाइन बुकिंग सेवा प्रारंभ की है। अब पर्यटक ecotourism.mponline.gov.in पर जाकर घर बैठे ईकोपर्यटन स्थलों पर उपलब्ध गतिविधियों की जानकारी, ऑनलाइन आरक्षण एवं भुगतान सुविधा, ईकोपर्यटन स्थलों के छायाचित्र एवं चलचित्र और विभिन्न कार्यक्रम- नेचर कैम्प, ट्रेकिंग कैम्प, बर्ड वाचिंग कैम्प की जानकारी एवं नामांकन सुविधा का लाभ उठा सकेंगे। यह सुविधा 3 जंगल कैम्प कठौतिया, समरधा और केरवा के लिये की गई है।

वन विभाग की उल्लेखनीय गतिविधियाँ

नौ प्रजातियां परिवहन अनुज्ञा पत्र को मुक्त– राज्य शासन द्वारा अधिसूचना दिनांक 11 अप्रैल 2017 द्वारा नौ प्रजातियों (आकाश नीम, अगस्त, नारियल, खजूर, ताड़, पेपर मलबरी, पांजारा, झदेशड़ा और कस्तार) को परिवहन के लिए अनुज्ञा पत्र से मुक्त किया गया है। वर्तमान में 60 प्रजातियों के वृक्ष परिवहन अनुज्ञा पत्र से मुक्त हो चुके हैं।

राज्य वन्यप्राणी बोर्ड का पुनर्गठन– राज्य शासन द्वारा दिनांक 17 अप्रैल, 2017 को जारी अधिसूचना से राज्य वन्यप्राणी बोर्ड पुनर्गठन किया गया है। माननीय मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में गठित बोर्ड में माननीय वन मंत्री श्री गौरीशंकर शेजवार को उपाध्यक्ष तथा माननीय राज्यमंत्री श्री सूर्य प्रकाश मीणा को सदस्य बनाया गया है। इस बोर्ड में कुल 30 सदस्य बनाए गए हैं।

वन अधिकारियों की क्षेत्रीय कार्यशाला सम्पन्न– ग्वालियर, शिवपुरी तथा छतरपुर वन वृत्त के वन अधिकरियों की कार्यशाला दिनांक 18 अप्रैल 2017 को ग्वालियर में सम्पन्न हुई। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यशाला में वन प्रबंधन से जुडे.विभिन्न मुद्दों पर चर्चा कर भविष्य की रणनीति तय की गई। इस अवसर पर प्रधान वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख द्वारा चार वन चौकी वाहन, संबंधित वन चौकी प्रभारियों को सौंपे गये। इसी प्रकार 12 रिवाल्वर वन परिक्षेत्र अधिकारियों को वितरित किए गए।

नर्मदा सेवा मिशन का गठन– राज्य शासन द्वारा प्रदेश की जीवन रेखा नर्मदा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए नर्मदा सेवा मिशन का गठन किया गया है। मिशन के तहत संबंधित विभागों द्वारा किये जाने वाल कार्यो को सूचीबद्ध किया गया है। इसके तहत वन विभाग को गर्मियों में जंगल में सूखे पत्तों के कारण आग लगने की घटनाओं पर नियंत्रण के लिए कार्य योजना तैयार कर क्रियान्वयन करना, वन क्षेत्र में उपयुक्त स्थानों का चिन्हांकन कर वनों के विकास एवं वन्य प्राणियों हेतु लघु एवं बड़ी संरचनाओं के निर्माण का दायित्व रहेगा। साथ ही अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त इन्दौर में एक टिश्यू कल्चर लैब का योजनाबद्ध तरीके से विस्तार भी विभाग द्वारा किया जायेगा।

वन विभाग की राज्य स्तरीय समिति का गठन– राज्य शासन द्वारा प्रधान मुख्य वनसंरक्षक एवं वन बल प्रमुख की अध्यक्षता में वन विभाग की राज्यस्तरीय समिति का गठन किया गया है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत काष्ठ आधारित उद्योग (स्थापना एवं विनियमन) दिशा–निर्देश 2016 के अन्तर्गत यह समिति गठित की गई है।

वनोपज संग्राहकों को एक हजार रुपये से कम का नगद भुगतान– वनोपज संग्राहकों की असुविधा को दृष्टिगत रखते हुए तेन्दूपत्ता संग्राहकों को संग्रहण पारिश्रमिक एवं प्रोत्साहन बोनस राशि को एक हजार से कम का भुगतान नगद करने का निर्णय लिया गया। माननीय मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा दिनांक 11 मई को राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा प्रदेश में समर्थन मूल्य पर महुआ फूल खरीदी की समीक्षा के दौरान इस संबंध में निर्देश दिए गए।

राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा संग्राहकों के हितों की रक्षा

तेंदूपत्ता संग्रहण – मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार तेंदूपत्ता उत्पादक क्षेत्रों में अग्रिम निर्वर्तन द्वारा क्रेता नियुक्त कर, इन क्रेताओं को प्राथमिक सहकारी समितियों के माध्यम से संग्रहित तेंदूपत्ता संग्रहण केन्द्रों (फड़ों) से प्रदान किया जाता है। संग्रहण वर्ष 2017 में अग्रिम निर्वर्तन हेतु 22.00 लाख मानक बोरा अधिसूचित कर व्यापारियों को अग्रिम निर्वर्तन द्वारा रुपये 1268.30 करोड़ में विक्रय किया गया। जिसके विरुद्ध 23.36 लाख मानक बोरा संग्रहित मात्रा के आधार पर विक्रय मूल्य 1339 करोड़ प्राप्त होगा। वर्ष 2017 मध्यप्रदेश राज्य लघु वनोपज संघ के इतिहास में तेंदूपत्ता संग्राहकों के हितों की दृष्टि से स्वर्णिम वर्ष है। तेंदूपत्ता संग्राहकों को उनके द्वारा संग्रहित तेंदूपत्ता की संग्रहण पारिश्रमिक के रूप में कुल राशि रुपये 292 करोड़ वितरित हुई है, जिससे लगभग 1.25 करोड़ के मानव दिवस का रोजगार सृजित हुआ है। इसके अतिरिक्त तेंदूपत्ते के व्यापर से हुई आय समितियों को हस्तांतरित की जाएगी। एक अनुमान अनुसार वर्ष 2017 हेतु लगभग राशि रुपये 500 करोड़ का प्रोत्साहन पारिश्रमिक तेंदूपत्ता संग्राहण से जुड़े लगभग 30 लाख संग्राहको का प्राप्त होगा।

महुआ फूल/गुल्ली संग्रहण – माननीय मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश शासन श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा मध्यप्रदेश के वनवासियों की आजीविका हेतु महुआ बिचौलियों से मुक्ति हेतु दिनांक 18 अप्रैल, 2017 को उमरिया उत्सव के दौरान वर्ष 2017 से महुआ फूल/महुआ गुल्ली एवं अचार गुठली के समर्थन मूल्य पर क्रय करने हेतु इन वनोपज की क्रय दर में वृद्धि की घोषणा की गई। जिसके पालन में महुआ फूल क्रय हेतु न्यूनतम समर्थन मूल्य रुपये 14/– प्रति किलो से बढ़ाकर रुपये 30/– प्रति किलो निर्धारित किया गया है।

वर्ष 2017 में मध्यप्रदेश शासन द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर दिनांक 30 जून 2017 तक 64 हजार क्विंटल महुआ फूल रुपये 18.98 करोड़ में क्रय किया गया है। महुआ संग्रहण 46 जिला लघु वनोपज यूनियन के माध्यम से 1189 केन्द्रों पर किया गया। महुआ संग्रहण के इतिहास में प्रदेश में अब तक का यह सर्वाधिक संग्रह है, जिससे कुल 8.18 लाख मानव दिवस का रोजगार सृजित हुआ है।

जैव-विविधता संरक्षण एवं जागरुकता कार्यशाला

राज्य जैव-विविधता बोर्ड द्वारा 17 मई, 2017 को होटल पलाश में प्रेस प्रतिनिधियों के लिये जैव-विविधता संरक्षण एवं जागरुकता पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें भोपाल के प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कार्यशाला में जैव-विविधता अधिनियम, मध्यप्रदेश जैव-विविधता नियम, जैविक संसाधनों तक पहुँच और सहयुक्त जानकारी तथा फायदा बाँटना विनियम, जैव-विविधता संरक्षण, जैव-विविधता का संवहनीय उपयोग, जैव-विविधता प्रबंधन समितियाँ, जैव-संसाधनों के वाणिज्यिक उपयोग से उदभूत लाभों का साम्यपूर्ण प्रभाजन आदि का प्रस्तुतिकरण किया गया।

कूनो वन्यप्राणी वनमण्डल में बटरफ्लाई मैपिंग कार्यशाला का आयोजन

मध्य प्रदेश में एशियाई सिंहों के पुनर्स्थापन हेतु चयनित कूनो वन्यप्राणी वनमण्डल, श्योपुर में तितलियों की जैव विविधता की जानकारी प्राप्त करने हेतु इस वनमण्डल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिये तितलियों के परिचय एवं पहचान हेतु दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 19-20 अप्रैल, 2017 को किया गया था। इस कार्यशाला में रिसोर्स पर्सन के रूप में श्री असीम श्रीवास्तव, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन सम्मिलित हुये। कार्यशाला में सहभागियों को तितलियों के उद्भव, वर्गीकरण, जीवनचक्र, उनकी पारिस्थितिकीय एवं उनके द्वारा प्रदर्शित किये जाने वाले विशेष गुणों जैसे- मिमिक्री, सीज़नल वेरियेशन, माईग्रेशन, कैमोफ्लाज इत्यादि के बारे में जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त तितलियों की पारिस्थितिकीय तंत्र में महत्ता के बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराई गई। तितलियों के प्राकृतिक वासस्थल में उन्हें बिना डिस्टर्ब किये हुये किस प्रकार उनका फिल्मांकन किया जा सके, इस बारे में भी कार्यशाला में जानकारी प्रदान की गई। कार्यशाला के अगले चरण में तितलियों की पहचान तथा उनकी फोटोग्राफी के संबंध में क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया ताकि क्षेत्रीय अमला अपने नियमित कार्यों के साथ-साथ तितलियों की पहचान एवं फिल्मांकन कर सके जिससे भविष्य में वनमण्डल में पाई जाने वाली तितलियों की चैक लिस्ट तैयार की जा सके।

राष्ट्रीय बाघ आंकलन वर्ष 2018 के लिए प्रशिक्षण

मास्टर ट्रेनर हुए तैयार

अखिल भारतीय राष्ट्रीय बाघ आंकलन वर्ष 2018 में किया जाना है। जिसमें सम्पूर्ण मध्यप्रदेश को 7 क्लस्टरों में बांटा गया है। प्रत्येक क्लस्टर में आने वाले वनमंडल हेतु तीन–तीन मास्टर ट्रेनर को चयनित किया गया एवं उनके लिए वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के विशेषज्ञ प्रशिक्षिकों द्वारा तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके तहत पन्ना, पेंच, इन्दौर, कान्हा, सतपुड़ा, एवं बांधवगढ़ क्लस्टर में आने वाले वनमंडलों के 250 से अधिक मास्टर ट्रेनर को बाघ आंकलन से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण उपरांत मास्टर ट्रेनर के द्वारा अपने–अपने कार्यक्षेत्र में बीट स्तर के कर्मचारियों को तीन दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। जिसमें बीट गार्ड को आंकलन से संबंधित बाघ, तेन्दुए एवं अन्य मांसाहारी वन्यप्राणियों के साक्ष्य एकत्रीकरण, ट्रांजेक्ट वाक के दौरान रखे जाने वाली सावधानियाँ एवं राष्ट्रीय बाघ गणना से संबंधित विभिन्न फार्म– प्रविष्टियाँ दर्ज करते समय सावधानियाँ आदि पर प्रशिक्षण दिया जायेगा। जुलाई महीने के अंत तक मास्टर ट्रेनर द्वारा 8500 बीट गार्डों को प्रशिक्षण दिया गया।

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति व पदोन्नति

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति माह (अप्रैल–जून, 2017)

- श्री सुधीर कुमार पवार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, भोपाल
- श्री अभय कुमार जैन, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक, भोपाल
- श्री सत्येन्द्र बहादुर, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, भोपाल
- श्री अजय पाल सिंह, मुख्य वन संरक्षक, राज्य लघु वनोपज संघ भोपाल
- श्री दिनेश चंद्र गुप्ता, वन संरक्षक, कार्यालय प्र.मु.व.सं., भोपाल (समन्वय)
- श्री आर.एस. अलावा, मुख्य वन संरक्षक, बैतूल

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति माह (अप्रैल–जून, 2017)

क्र.	अधिकारी का नाम	पदोन्नति उपरांत नवीन पदस्थिति
1.	श्री अजय पाल सिंह	मुख्य वन संरक्षक, राज्य लघु वनोपज संघ भोपाल

छिंदवाड़ा में न्यायालयीन प्रकरणों की कार्यशाला का आयोजन

वन अपराध प्रकरणों एवं माननीय न्यायालय में प्रस्तुत किये जाने वाले प्रकरणों के प्रस्तुतिकरण व अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार व अधीनस्थ कर्मचारियों में जागरुकता हेतु वनवृत्त छिंदवाड़ा के अंतर्गत दक्षिण छिंदवाड़ा वनमंडल के वनमंडलाधिकारी श्री रविंद्रमणि त्रिपाठी के द्वारा दिनांक 28 जून 2017 को एक महत्वपूर्ण कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री एल.डी. बोरासी, माननीय अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी श्री एम.के. त्रिपाठी, श्री अभय सिंह ठाकुर अधिवक्ता, सहायक जिला लोक अभियोजक छिंदवाड़ा एवं श्री ऋषिकेश यादव जिला फोरैंसिक अधिकारी मुख्यरूप से उपस्थित रहे।

कार्यशाला का शुभारंभ माननीय श्री एल.डी. बोरासी जिला एवं सत्र न्यायाधीश छिंदवाड़ा के द्वारा किया गया व प्रारंभ में श्री रविंद्रमणि त्रिपाठी वनमंडलाधिकारी द्वारा कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया। माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश द्वारा वन विभाग से संबंधित समस्त कानूनी बारीकियों को बताते हुए सारगर्भितरूप से वन अधिकारीयों को महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

“बारासिंघा कंजरवेशन एट कान्हा” पुस्तक का विमोचन

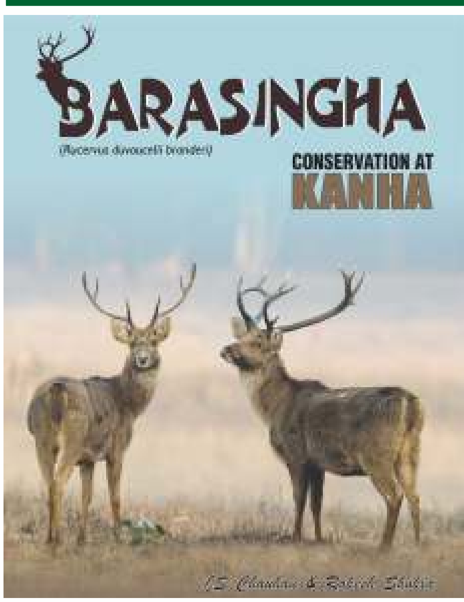

दिनांक 21 अप्रैल को भारतीय सिविल सेवा दिवस के उपलक्ष्य में भोपाल की आरसीवीपी नरोन्हा प्रशासन व प्रबंधकीय अकादमी में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कान्हा टाइगर, रिजर्व में बारासिंघा संरक्षण पर लिखी गई पुस्तक ''बारासिंघा कंजरवेशन एट कान्हा'' का मध्यप्रदेश शासन के माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा विमोचन किया गया। इस पुस्तक के लेखक कान्हा टाइगर रिजर्व के पूर्व क्षेत्र संचालक जे.एस. चौहान व अनुसंधान अधिकारी डॉ. राकेश शुक्ला हैं। हार्ड ग्राउंड बारासिंघा वर्तमान में विश्व में मात्र कान्हा टाइगर रिजर्व में पाये जाते हैं, जिनकी संख्या वर्तमान में लगभग 750 है।

वन विहार में सिंहों का आगमन

केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण नई दिल्ली एवं मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक म.प्र. के निर्देशों के पालन में दिनांक 14 अप्रैल 2017 को गुवाहाटी चिड़ियाघर, असम से 2150 किलोमीटर की दूरी तय कर भोपाल में स्थित वन विहार राष्ट्रीय उद्यान के रेस्क्यू सेंटर में चार सिंह लाये गये। जिनमें से दो नर एवं दो मादा हैं। नर सिंहों के नाम लाबा (जन्म 27.10.2004) एवं मोन्टू (जन्म 11.05.2005) है तथा मादा सिंह वृन्दा और वरू हैं। दोनों मादा सिंह दिनांक 28.01.2007 को जन्मी थी। वन्यप्राणी चिकित्सक डॉ. अतुल गुप्ता के नेतृत्व में एक दल 6 अप्रैल को असम रवाना हुआ था। सिंहों को दो विशेष वाहनों में उनके खानपान एवं आराम का पूर्ण ध्यान रखकर लाया गया। गर्मी के मौसम को देखते हुये वाहनों में एक्जास्ट पंखों एवं मिस्टिंग पंखों की व्यवस्था की गई थी। लगभग हर 80–100 कि.मी. बाद वाहनों को रोक सिंहों की डाक्टरी जांच की जाती रही और उनके खान–पान का भी विशेष ध्यान रखा गया। वाहनों की गति नियंत्रित रखना जरूरी था इसलिये सिंहों के स्वास्थ्य हित में और परिवहन का समय कम करने की दृष्टि से टीम अधिक विश्राम न कर सतत चलती रही। सिंहों का इतनी दूरी से परिवहन एक साहसिक एवं चुनौतीपूर्ण कार्य था, जिसका वन विहार की टीम ने अच्छे समन्वय एवं उत्साह से पूर्ण किया। 80 घंटों का सफर तय कर वन विहार पहुंचे सिंहों का भव्य स्वागत हुआ और कीपर उनकी देखभाल में जुट गये।

लाबा

वृन्दा

वरू

मोन्टू

Contest

Wildlife Wonders of Madhya Pradesh Photography

Photo: Mr. Deepansh Mishra

Photo: Mr. Faizan Khan

Theme : Birds Of Madhya Pradesh

The fourth series of the Wild life photography contest "Wildlife Wonders of Madhya Pradesh" was organized by MP Tiger Foundation Society. The winner, Mr. Deepansh Mishra was awarded a voucher entitling him for a 2 Night hotel stay and Rs 20,000 -/ cash.

The top three photographs which received maximum likes in Facebook were awarded "Facebook Favourite Awards". The winner with 394 likes, Mr. Devang Shrimali was awarded a prize of 5000 rupees. The first and second runners up were given a prize of 3000 rupees and 2000 rupees respectively. A total of 10 participants received a special mention award. They were awarded a prize money of 5000 rupees.

Photo: Mr. Devang Shrimali

Photo: Miss. Anna Maria Fernandis

Photo: Mr. Mridul Soni

अखबारों के आईने में

दैनिक जागरण

पंचायतों में पौधों को बचाने नियुक्त होंगे पौध रक्षक

शावकों की दहाड़ से गूंज रहा जंगल ...

पन्ना के बाघों की तीसरी पीढ़ी से बढ़ेगा जिले में बाघों का कुनबा

प्रयास

राजधानी सहित प्रदेश के अन्य टाइगर रिजर्व में होगी शिफ्टिंग

बाघों की सुरक्षा के लिए कर्नाटक से आएंगे हाथी

पत्रिका 19 APR 2017

जैव विविधिता को बचाने 50 प्रजातियों के पौधे रोपे जाएंगे

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

The Hitavada 11 MAY 2017

Over 32,000 quintal Mahua Phool procured, over Rs 9 crore paid to Collectors

कान्हा के बाद अब सतपुड़ा में देखी गई जंगली बिल्ली

दुर्लभ वन्य प्राणियों में होती है गिनती

नवदुनिया 09 MAY 2017

मई के आखिरी सप्ताह से पर्यटकों को मिलेगी सुविधा

34 लाख रु. की लग्जरी बस में कर सकेंगे वाइल्ड लाइफ टूरिज्म की सैर

ब बाघ का शिकार करने पर होगी 12 साल की सजा, 10 लाख का जुर्माना भी

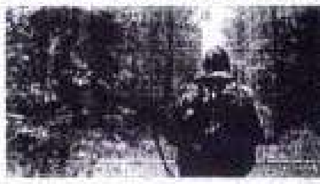

पीपुल्स समाचार 03 MAY 2017

ट्रैप कैमरे से होगी बाघों की निगरानी

वन विभाग ने अपने मैदानी कर्मचारियों को दिया प्रशिक्षण

राज एक्सप्रेस

वन्यप्राणी प्रेमियों के लिए खुशखबरी

बाधवगढ़ में बाघिन ने जन्मे चार शावक

पहल

देश में मप्र बना बाघ, हिरणों की शिफ्टिंग का एक्सपर्ट

पर्यटक रात में उठा सकेंगे जंगल का लुत्फ

फारेस्ट को 25 करोड़ तक खर्च करने की छूट मिली

वन्यप्राणी प्रेमियों के लिए खुशखबरी

बाधवगढ़ में बाघिन ने जन्मे चार शावक

हरित साहित्य

एक संकल्प– सृजन का

आओ, मिलकर कुछ ऐसा कर जाऐं,
धरा–सृजन का फिर संकल्प उठायें
धरती–माँ को हरियाली चूनर पहनाऐं।

गली–गली और सड़क–सड़क पर
आम, अमला पीपल, नीम लगायें
सूखे पर्वत, उजड़े उपवन
व्याकुल धरा फिर लहराये।
आओ, मिलकर कुछ ऐसा कर जाऐं,
धरा– सृजन का फिर संकल्प उठायें
धरती–माँ को हरियाली चूनर पहनाऐं।

पंछी–पंछी को मिले बसेरा
हर पशु दाना–पानी पाये
सूखी अमराई फिर से बौराए
कोयल जिसमें मीठी तान सुनाये
आओ, मिलकर कुछ ऐसा कर जाऐं,
धरा–सृजन का फिर संकल्प उठायें
धरती–माँ को हरियाली चूनर पहनाऐं।

घर–घर तुलसी पावनता फैलाएं
हर बगिया पुष्प–पौध से महकायें
कीट–पतिंगे जीवन पायें
भौरों की भन–भन से मन लहराये।
आओ, मिलकर कुछ ऐसा कर जाऐं,
धरा–सृजन का फिर संकल्प उठाये
धरती–माँ को हरियाली चूनर पहनाऐं

धूल–धुएं की दूषित हवा से
फिर ना प्राणों का शोषण हो
सब ऋतुओं में समरसता हो
विशुद्ध वायु से विश्व–धरा का पोषण हो
आओ, मिलकर कुछ ऐसा कर जाऐं,
धरा–सृजन का फिर संकल्प उठायें
धरती–माँ को हरियाली चूनर पहनाऐं

(रमाशंकर पाटिल)
सहायक ग्रेड–3
कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(उत्पादन)

धरती धरोहर है।

पर्यावरण के मित्र बनें हम, नही वनों के शत्रु बनें हम,
जहां प्रदूषण भीषण फैला, सदा महकता इत्र बनें हम।
सबको हक है, इस दुनिया में जीने का दोबारा,
हरा भरा हो वन्य हमारा, सारे जग से हो न्यारा..........

उनको भी हक जीने का, हवा और पानी पीने का,
जीव–जन्तु को दुःख न देना, वास्ता जिन्हें मदीने का।
हम लेते ही रहें प्रकृति से, देन भी है धर्म हमारा,
हरा–भरा हो वन्य हमारा, सारे जग से हो न्यारा............
हम अपना वचन निभाऐंगे, जब हम औकात में आऐंगे,
एक नहीं दो नहीं अनेकों, हम बच्चे पौधा लगाऐंगे।
हम सम्बल देंगे पेड़ों को, बन जाए वन एक हमारा
हरा–भरा हो वन्य हमारा, सारे जग से हो न्यारा...............

वन्य जीव वन का आधार, इनसे करना सीखें प्यार,
जंगल में मंगल की वर्षा, होवे जन–जग का उद्धार।
देखें हम अपनी नजरों से, जंगल का यह अजब नजारा,
हरा–भरा हो वन्य हमारा, सारे जग से हो न्यारा..................
नंगी धरती करे पुकार, बच्चों कर लो इससे प्यार,
माटी–पानी और बयार, ये हैं जीवन के आधार।
इसके बिना जिंदगी में, हरगिज न होगा कभी गुजारा
हरा–भरा हो वन्य हमारा, सारे जग से हो न्यारा..................

डॉ. जगदीश प्रसाद रावत
सहायक वन संरक्षक
म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड

अनुरोध

पाठकों से अनुरोध है कि अपने अभिमत एवं सुझावों से अनुग्रहीत करने का कष्ट करें।

ईकोटूरिज्म

सिवनी में उभरते प्रमुख ईकोटूरिज्म स्थल

मध्यप्रदेश के पास अपने मौजूदा ईकोटूरिज्म स्थलों को बढाने और नए स्थलों के विकास के लिए बहुत बड़ी क्षमता है। सिवनी वनमण्डल की कुछ प्रमुख साइट जो लोकप्रिय ईकोटूरिज्म स्थल बनने की क्षमता रखते हैं वह है –

1. अम्बामाई मंदिर :

दक्षिण सिवनी वनमण्डल के अन्तर्गत ईको टूरिज्म की पर्याप्त संभावनाएं हैं। इन क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने से स्थानीय लोगों को रोजगार के साथ–साथ वनों के संरक्षण में मदद प्राप्त होगी। अम्बामाई जिला मुख्यालय सिवनी से 17 कि.मी. दूरी एवं जबलपुर से 162 कि.मी. दूरी पर सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के बीच घने जंगलों में स्थित है। वर्तमान में वन विभाग द्वारा एक चेतना केन्द्र भी यहां निर्मित किया गया है, जो प्रचार–प्रसार के उद्देश्यों के साथ–साथ पर्यटन के लिये आने वाले सैलानियों को आवास की सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से वर्ष 1990 में निर्मित हुआ है। चारों ओर घने वनक्षेत्र एवं पहाड़ियों से घिरा यह क्षेत्र सुरम्य दृष्टिगोचर होता है।

2. पायली

पर्यटन स्थल पायली ग्राम पायली के समीप नर्मदा नदी पर निर्मित प्रसिद्ध रानी अवंतीबाई सागर (बरगी बांध) के भराव क्षेत्र के किनारे अंतर्गत स्थित है। यहां पर अति प्राचीन अंग्रेजों के समय का एक वन विश्राम गृह है, जो कि जल भराव क्षेत्र के बीचों–बीच टापू पर स्थित है, पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। टापू पर मात्र नाव के सहारे ही पहुंचा जा सकता है। वर्तमान में वन विभाग द्वारा एक वन चेतना केन्द्र (वन विश्राम गृह) भी यहां निर्मित किया गया है, जो प्रचार–प्रसार के उद्देश्यों के साथ–साथ पर्यटन के लिये आने वाले सैलानियों को आवास की सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से वर्ष 1998 से संचालित है। प्रकृति भमण के अंतर्गत् अनेको सुंदर भू–भाग, प्राकृतिक छटा, अंतहीन वनों का विस्तार, वन्य प्राणियों, पक्षियों की अठखेलियां और रोमांचकारी अनुभव, लम्बी दूरी तक नौका विहार, हरी भरी वादियाँ, पहाड़ियों की विचित्र बनावट तथा शाम से रात्रि के समय बरगी डेम की जगमग रोशनी एवं चन्द्रमा के प्रकाश का पानी में छटा, पर्यटकों को ऐसी अनोखी दुनिया में ले जावेगी जहां पग–पग पर रोमांच और आनंद बिखरा हुआ महसूस होता है।

श्रद्धांजलि

जन्म : 6 जुलाई 1956
निधन : 18 मई 2017

श्री अनिल माधव दवे

भारत सरकार में पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री रहे श्री अनिल माधव दवे का निधन 18 मई 2017 को हुआ। स्वर्गीय श्री अनिल माधव दवे का जन्म 6 जुलाई 1956 को उज्जैन के बाड़नगर में हुआ था। वह अत्यंत सरल व्यक्तित्व एवं आदर्शों के धनी थे। दवे जी ने स्नातक की शिक्षा गुजराती कालेज इन्दौर से ग्रामीण विकास विषय से की। जेपी मूवमेंट में भाग लेते हुए उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की और महाविद्यालय के अध्यक्ष चुने गए। वह राष्ट्रीय कैडेट कोर के एयर विंग के कैडेट भी थे। वे एक पर्यावरणविद और राजनीतिज्ञ थे। वे जुलाई 2016 से भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय में राज्य मंत्री के रूप में सेवा कर रहे थे। वे मध्यप्रदेश से 2009 से राज्य सभा सदस्य के रूप में प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वह सूचना और प्रसारण मंत्रालय के लिए जल संसाधन समिति एवं परामर्शदात्री समिति सहित विभिन्न समितियों का सदस्य रहे। वह मार्च 2010 से जून 2010 तक ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन पर संसदीय फोरम के सदस्य भी थे।

श्री अनिल माधव दवे ने अपना सारा जीवन पर्यावरण संरक्षण को समर्पित किया है। वे नदियों के संरक्षण के लिए हमेशा चिंतित रहे और उन्होंने इस दिशा में कई ठोस प्रयास भी किये। नर्मदा नदी के पुनरुत्थान के लिए उन्होंने नर्मदा समग्र की स्थापना की। यह संगठन नर्मदा नदी के संरक्षण के लिए कार्य कर रहा है। नदियों के प्रति उनकी गहन आस्था थी, यही कारण है कि भोपाल में उनके निवास का नाम 'नदी का घर' था।

श्री अनिल माधव दवे ने अपने जीवनकाल में कई पुस्तकें भी लिखी हैं। सृजन से विसर्जन तक, चंद्रशेखर आजाद, संभल के रहना घर में छुपे हुए गद्दारों से, शताब्दी के पांच काले पन्ने, नर्मदा समग्र, समग्र ग्राम विकास, फ्रॉम अमरकंटक टू अमरकंटक एवं बियॉन्ड कोपेनहेंगेन उनकी कुछ प्रमुख रचनाओं में से है।

श्री अनिल माधव दवे की वसीयत

स्वयं के संबंध में

1. संभव हो तो मेरा दाह संस्कार बांद्राभान में नदी महोत्सव वाले स्थान पर किया जाये।
2. उत्तर क्रिया के रूप में केवल वैदिक कर्म ही हो, किसी भी प्रकार के दिखावा, आडंबर न हो।
3. मेरी स्मृति में कोई भी स्मारक, प्रतियोगिता, पुरस्कार, प्रतिमा इत्यादि जैसे विषय कोई भी न चलाएं।
4. जो मेरी स्मृति में कुछ करना चाहते हैं, वे कृपया वृक्षों को बोने व उन्हे संरक्षित कर बड़ा करने का कार्य करेंगे तो मुझे आनंद होगा। वैसे ही नदी–जलाशयों के संरक्षण में अपनी सामर्थ्य अनुसार, अधिकतम प्रयत्न भी किये जा सकते है। कार्य करते हुए भी मेरे नाम के प्रयोग से बचेंगे।

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने स्वर्गीय श्री अनिल माधव दवे की स्मृति में लगाए आम के पौधे

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने बांद्राभान में स्वर्गीय श्री अनिल माधव दवे के अस्थि संचय के बाद आँगनवाड़ी केन्द्र परिसर में स्वर्गीय श्री दवे की स्मृति में आम के पाँच पौधों का रोपण किया। उन्होंने उपस्थित लोगों से आग्रह किया कि वे वृक्ष लगाएं और उनकी देखभाल भी करें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने आँगनवाड़ी केन्द्र में पहुँचकर बच्चों के साथ बातचीत भी की।

वृक्षारोपण के विभिन्न चरण

1. क्षेत्र की सफाई

2. गड्ढा खोदना

3. मिट्टी से कंकर पत्थर निकालना

4. मिट्टी में खाद मिलाना

5. पौधे की पॉलीथीन काटना

6. पॉलीथीन को पौधे से अलग करना

7. पौधे को लगाना

8. पौधे की सिंचाई एवं थाला बनाना

Source : नर्मदा तट पर वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियां एवं रोपण विधियां, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

Feedback, suggestions, and contributions are welcome at dcfpracharprasar@mp.gov.in

Photo: Parth Jha

Photo: Dilip Katiya

Photo:Shail Katiyar

Photo: Shariq Khan

Photo: Mohammed Junaid

Photo: Susmita Datta

Source : "Wildlife Wonders of Madhya Pradesh" organized by MP Tiger Foundation Society

MADHYA PRADESH FOREST DEPARTMENT

Satpura Bhawan, Bhopal - 462004

mpforest.gov.in